

# वैश्विक मानचित्र पर उभर रही है भारत की उपलब्धियाँ



हाल के वर्षों में, भारत की नकारात्मक छवि दुनिया भर में सकारात्मक हो गई है। दुनिया के नेताओं और लोगों की भारत, इसके लोगों, सांस्कृतिक विरासत और सबसे महत्वपूर्ण निस्वार्थ सेवा, योग, ज्ञान और आध्यात्मिक अभ्यासों के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक धारणा बनी है।

हम भारतीय के रूप में “वसुधैव कुटुम्बकम्” इस मंत्र में विश्वास करते हैं, जिसका अर्थ है “पूरी दुनिया मेरा परिवार है,” और भारत कोरोना के इस कठिन दौर में अन्य देशों को सहायता करके इस वाक्यांश को सही अर्थों और रूप से जमीन पर साबित कर रहा है। हर देश किस दौर से गुजर रहा है और लोगों की रक्षा और जरूरी सामग्री के लिए मदद की सख्त जरूरत है, यह भारत प्रत्यक्ष रूप से कर के दिखा रहा है। और भारत विषमताओं के इस दौर में न केवल अविकसित देशों की सहायता कर रहा है, बल्कि कोरोना, बचाव अभियान और मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास सहित सभी मोर्चों पर विकसित देशों की भी मदद कर रहा है।

कई भारतीय आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों के साथ-साथ भारत सरकार ने दुनिया भर में लोगों के मन को बदलने के लिए अथक प्रयास किया है, भले ही वे विभिन्न धर्मों के मानने वाले हों। भले ही भारत कई मोर्चों पर खुद पीड़ित है, लेकिन सभी को साथ लाने के इस रवैये ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक सकारात्मक लहर पैदा की है। भारत अब एक समस्या या बाधा निर्माता की बजाय समाधान प्रदाता के रूप में देखा जा रहा है।

मैं आपको कुछ तथ्य और आंकड़े देता हूँ जिससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि भारत दुनिया का आकर्षण केंद्र क्यों है और हमारा सन्मान, रुतबा कैसे बढ़ रहा है।

कोरोना ने दुनिया की सबसे ताकतवर अर्थव्यवस्थाओं को भी बड़ा झटका दिया है। यह बड़े और छोटे सभी राष्ट्रों के लिए एक भयावह आपदा है। लाखों लोगों ने कष्ट सहे, अपनी जान गंवाई, या अपनी जान गंवाने से डरते थे, और जो कुछ भी उन्होंने वर्षों में बचाया था, उसे भी खो दिया। हर कोई सांत्वना की तलाश में था, और इस कठिन समय के दौरान, भारत बिना किसी हिचकिचाहट के दवाओं, उपकरणों और वैक्सीन की आपूर्ति में सहायता के लिए आगे बढ़ा। इस तथ्य के बावजूद कि एक बड़ी आबादी के कारण भारत में स्थिति ठीक नहीं थी, भारत सरकार ने समय पर आवश्यक आपूर्ति वाले देशों की

सहायता करने का निर्णय लिया और कार्य किया।

भारतीय आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संगठनों ने वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भले ही उनके पास भौतिकवादी जीवन में सब कुछ है, लेकिन धरती पर हर इंसान खराब दिमाग प्रबंधन और इस प्रकार खराब जीवन प्रबंधन के परिणामस्वरूप पीड़ित है। वे सभी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए आयुर्वेद, योग, ध्यान, प्राणायाम और अन्य आध्यात्मिक प्रथाओं की महान भारतीय विरासत का उपयोग करते हैं। कई विदेशियों ने इन प्रथाओं में खुद को प्रशिक्षित किया है और अपने देश में बहुत पैसा कमा रहे हैं। लोग भारतीय प्रणालियों का अभ्यास करके अपने जीवन का उद्देश्य, मन की शांति और अर्थ ढूंढ रहे हैं। लोगों की धारणा बदल गई है, और वे अब मन की शांति और “आंतरिक धन” के गहन ज्ञान के लिए भारत की यात्रा करते हैं।

आध्यात्मिक प्रवचन विदेशियों के जीवन का एक बहुत बड़ा अंग बन चुका है क्योंकि वे सभी हमें मनोविज्ञान से जोड़ते हैं और भौतिक और आध्यात्मिक रूप से प्रगति के लिए हर पहलू की गहरी वैज्ञानिक जड़ों से जोड़ता है। दुनिया भर में कई लोगों ने आत्मा को और उनके संबंधित भागों जैसे मन, बुद्धि, स्मृति और अहंकार की बेहतर समझ हासिल करने के लिए भगवद गीता और वैदिक साहित्य का अध्ययन करना शुरू कर दिया है। जीवन का उद्देश्य क्या है, और इसे सभी की भलाई और पर्यावरण के लिए कैसे पोषित किया जा सकता है? यह भी सिख कर जीवन में उतारने की कोशिश हो रही है।

भारत को अब आईटी और अन्य इंजीनियरिंग क्षेत्रों में एक ज्ञान शक्ति के रूप में माना जाता है। दुनिया ने इस शक्ति को कड़ी मेहनत और भारतीय प्रतिभाओं के उपयोग से अपने संगठनों और अंततः अपने राष्ट्र को विकसित करने के लिए पहचाना है। दुनिया भर के कई प्रमुख संगठनों ने भारतीय विद्वानों को शीर्ष प्रबंधन पदों पर नियुक्त किया है। इसने भारतीय प्रतिभा और कड़ी मेहनत के प्रोफाइल को भी ऊंचा किया है। लाखों भारतीय दूसरे देशों में काम करते हैं, क्योंकि ज्ञान और कड़ी मेहनत ने जो विश्वास बनाया है वह काबिले तारीफ है।

2014 में वर्तमान सरकार की स्थापना के बाद से, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से 80000 से अधिक लोगों को बचाया गया है, जो एक आसान काम नहीं था, और वह भी किसी भी व्यक्ति के धर्म की परवाह किए बिना, न केवल भारत में विभिन्न धर्मों के लोग, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका सहित 26 युद्धग्रस्त देशों के नागरिक भी शामिल थे। धर्म, जाति या पंथ की परवाह किए बिना, प्रत्येक व्यक्ति से अपनेपन की भावना ने एक मजबूत संबंध और बंधन विकसित किया है, और जब भी कोई प्राकृतिक आपदा या प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होती है, तो लोग सहायता के लिए भारत की ओर देखते हैं।

हम उस विशेष सरकार द्वारा पूछे बिना तत्काल सहायता के कई उदाहरण देख सकते हैं, जैसे मॉरीशस में जल संकट, नेपाल में भूकंप, कई देशों को दवाओं, उपकरणों और टीकों की आपूर्ति, वित्तीय सहायता और जीवन यापन के लिए आवश्यक सामग्री की आपूर्ति, पर्यावरणीय पहलुओं में सुधार के लिए कार्रवाई, और इसी तरह अनेक उदाहरण... इस विकसित संबंध को कई देशों से उसी प्रकार की मदद से देखा गया था जब भारत कोरोना चरण II में एक कठिन दौर से गुजर रहा था।

योग दिवस सहित कई प्रस्तावों पर भारत को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अधिकांश देशों का जोरदार

समर्थन मिला है। यह भारत और उसके लोगों के सम्मान, विश्वास और अपनेपन के स्तर को प्रदर्शित करता है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सभी मोर्चों पर हमें धैर्यपूर्वक सुना गया है।

यही कारण है कि जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और उनकी टीम के स्तर पर वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध गलत बयानबाजी होती है तो कोई नहीं सुनता और न ही जवाब देता है, उल्टा भारत के समर्थन में सामने आते हैं। कई इस्लामी देशों ने भारत के प्रधान मंत्री को सर्वोच्च सम्मान दिया है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमारे प्रधानमंत्री को सर्वोच्च सम्मान मिला है।

जब भारत ने आतंकवादियों को मारने के लिए पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक की, तो उसे व्यापक अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिला।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि भारत के उत्थान का सूचक है। आत्मनिर्भर भारत की भी विश्व नेताओं द्वारा प्रशंसा और समर्थन किया जा रहा है।

पर्यावरण के क्षरण के खिलाफ भारत की लड़ाई को जबरदस्त सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है, जैसा कि पेरिस समझौते, सीओपी 26 और कई अन्य मंचों से प्रमाणित है। इस संबंध में की गई कार्रवाइयों, जैसे सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों और जंगलों और प्रजातियों के संरक्षण पर जोर, वैश्विक कार्यान्वयन के लिए व्यापक रूप से प्रशंसा और स्वीकार की गई है।

कई देशों में भारतीय कंपनियों और व्यापारियों की बढ़ती उपस्थिति निस्संदेह देश के प्रति सम्मान में वृद्धि के कारण है। कई शीर्ष सरकारी पद भारतीय मूल के लोगों को मिल रहे हैं।

कई देशों ने उपग्रहों को लॉन्च करने के लिए हमारी अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो पर भरोसा किया है और यह चलन दिन पर दिन बढ़ रहा है।

हम धीरे-धीरे “विश्व गुरु” की ओर बढ़ रहे हैं ताकि ग्रह पर हर इंसान का उत्थान हो और पर्यावरण का पोषण हो।